IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शैक्षिक एवं सामाजिक विकास में आर्य समाज का योगदान

डॉ. हरेन्द्र कुमार शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, महाराजा सूरजमल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, पक्का बाग, भरतपुर (राज०)

सारांश :-

स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान शिक्षाविद् समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रविद् तथा आधुनिक भारतीय समाज के निर्माता के रूप में अग्रणी कहे जा सकते हैं | दयानंद सरस्वती का सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की नींव रखना, जिसने शिक्षा व धर्म के क्षेत्र में क्रांति लाई | राष्ट्रीयता तथा समाज सुधार का रचनात्मक समन्वय प्रस्तुत कर दयानंद सरस्वती ने जिस प्रकार जीर्ण हिंदू समाज के समग्र नवीनीकरण का लक्ष्य प्राप्त किया एवं भविष्य के विकास का आरंभ किया, उसे एक महान उपलब्धि मानकर महान इतिहासकार बासम ने दयानंद सरस्वती को भारतीय लूथर की संज्ञा देते हुए उन्हें समाज सुधारक तथा राष्ट्रवाद का रचनात्मक समन्वय कर्ता बताया है | स्वामी दयानंद सरस्वती महान आर्य समाज के संस्थापक आधुनिक भारत के राजनीतिक विचारों के इतिहास का एक अद्वितीय इतिहास रखते हैं |

दयानंद सरस्वती भारत की आर्य संस्कृति के सबसे बड़े प्रेषित थे | वेदों के प्रचार के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की | आर्य समाज के नियम और सिद्धांत प्राणीमात्र के कल्याण के लिए हैं | संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना |

मुख्य शब्द :-

स्वामी दयानंद सरस्वती, शैक्षिक सामाजिक विकास, आर्य समाज, आर्य समाज का इतिहास, समाज सुधारक |

प्रस्तावना :-

स्वामी दयानंद सरस्वती 19वीं सदी के नवजागरण के सूर्य थे, जिन्होंने मध्ययुगीन अंधकार का नाश किया | आज्ञान, अन्याय और अभाव से ग्रस्त लोगों का उद्धार करने हेतु वे जीवन पर्यन्त संघर्ष करते रहे | महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्य की खोज के लिए अपने वैभव संपन्न परिवार का त्याग किया |

1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने मुंबई (मुंबई) में आर्य समाज की स्थापना की | उन्होंने वेदों को समस्त ज्ञान एवं धर्म के मूल स्रोत और प्रमाण ग्रंथ के रूप में स्थापित किया | अनेक प्रचलित मिथ्या धारणाओं को तोड़ा और अनुचित पुरातन परंपराओं का खंडन किया | उस अंधकार के युग में महर्षि दयानंद ने सर्वप्रथम उद्घोष किया कि वेद सब सत्य विधाओं की पुस्तक हैं | वेद का पढ़ना – पढाना और सुनना - सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है | आर्य समाज ने अपनी स्थापना से ही सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन का शंखनाद किया, जैसे – जातिवादी, जड़मूलक समाज को तोड़ना, महिलाओं के लिए समान अधिकार, बाल विवाह का उन्मूलन, विधवा विवाह का समर्थन, निम्न जातियों को सामाजिक अधिकार प्राप्त होना आदि | आर्य समाज एक ईश्वर में विश्वास करता है जिसे "ओम" से जाना जाता है, जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सभी न्यायप्रिय और आनंदमय, बुद्धिमान और दयालु का स्रोत है | ये सभी अलग - अलग नामों को दर्शाते हैं, जिनका एक पहलू ईश्वर है, एक सार्वभौमिक सत्य |

हम कह सकते हैं कि आर्य समाज द्वारा सुझाए गए शैक्षिक विचार व सामाजिक विकास में आर्य समाज का योगदान वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विशेष रूप से शामिल होने चाहिए | वर्तमान के विलासितापूर्ण और आधुनिकता वाले युग में शिक्षा प्रणाली के दोषों एवं सैद्धांतिक गिरावट को दूर करने के लिए आर्य समाज द्वारा सुझाए गए शैक्षिक विचारों को अपनाने की बहुत आवश्यकता है |

उद्देश्य :-

1. शिक्षा के विकास में आर्य समाज के योगदान का अध्ययन करना |
2. सामाजिक विकास में आर्य समाज के योगदान का अध्ययन करना |

शैक्षिक विकास में आर्य समाज का योगदान -

आर्य समाज एक हिंदू समाज सुधार आंदोलन है, जिसकी स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में बंबई में मथुरा के स्वामी विरजानंद की प्रेरणा से की थी | यह आंदोलन पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया स्वरूप हिंदू धर्म में सुधार के लिए प्रारंभ हुआ था | महर्षि जी का कहना था कि यदि यह समाज प्रगति करता है तो देश की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति होगी इसलिए वेदों को सर्वोच्च ग्रंथ माना और वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया| इस प्रकार आर्य समाज का उदय एवं प्रसार हुआ |

आर्य समाज एवं शिक्षा –

आर्य समाज का प्रमुख उद्देश्य हिंदू समाज में सुधार लाने का प्रयास करना था | इसी कारण उन्होंने लोगों को सुशिक्षित करना अति आवश्यक समझा | और शिक्षा के प्रचार - प्रसार के लिए भरसक प्रयास किए | 1869 में फर्रुखाबाद में आर्य समाज द्वारा पहली पाठशाला खोली गई | इस पाठशाला का शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा |

आर्य समाज के शिक्षा संबंधी सिद्धांत –

शिक्षा संबंधी सिद्धांतों में नि:शुल्क शिक्षा, लड़के एवं लड़कियों के लिए प्रथक प्रथक विद्यालय, अनिवार्य शिक्षा, गुरु एवं शिष्य के मध्य प्रेम संबंध, छात्रों का तपस्यात्मक जीवन, धार्मिक एवं सदाचारी अध्यापक आदि बातों को शामिल किया गया है |

आर्य समाज के शैक्षिक उद्देश्य / विचार :-

1. आत्मानुभूति
2. चरित्र निर्माण
3. विश्व बंधुत्व एवं मानवता का विकास
4. शारीरिक एवं मानसिक विकास

शिक्षण पद्धति - शिक्षक के लिए व्याख्यान उपदेश एवं व्यवहारिक वीडियो का समर्थन किया गया है
इसके अलावा अन्य विधियों निम्न हैं -

प्रत्यक्षानुभव विधि
तर्क विधि
साक्षात्कार विधि
स्वाध्याय विधि

पाठ्यक्रम :-

आर्य समाज द्वारा किसी पाठ्यक्रम की रचना तो नहीं की गई परंतु कुछ विषय एवं सिद्धांतों का वर्णन अवश्य किया गया है -

- आश्रम व्यवस्था सर्वोत्तम है |
- 25 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन |
- ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करने के लिए गणित खगोल विद्या आदि विषयों का अध्ययन करना |
- गर्भावस्था के दौरान मां का आचरण शुद्ध एवं सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए |

आर्य समाज की मुख्य शिक्षाएं-

संस्कृत में आर्य समाज का अर्थ है कुलीनों का समाज | आर्य समाज का मिशन इस धरती से गरीबी, अन्याय और अज्ञान को मिटाना है | इसके अलावा उन्होंने दस सिद्धांतों की स्थापना की जिन्हें दस नियम या सिद्धांत कहा जाता है | आर्य समाज एक ईश्वर में विश्वास करता है, जिसे "ओम" से जाना जाता है, जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सभी न्यायप्रिय और आनंदमय बुद्धिमान और दयालु का स्रोत है |

सामाजिक विकास में आर्य समाज का योगदान-

आर्य समाज का देश की आजादी में बहुमूल्य योगदान है | इसका पाखंडवाद और अंधविश्वास के खिलाफ संघर्ष अपने आप में एक अविचलित वैचारिक क्रांति है | देश की स्वतंत्रता में आर्य समाजियों की भूमिका अग्रणी रही है |

आर्य समाज ने डीएवी संस्थाओं के जरिए देश में शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है | 19वीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन में आर्य समाज अग्रणी था |

आर्य समाज ने कुछ महत्वपूर्ण प्रयास सामाजिक विकास हेतु किया जो निम्नलिखित हैं -

- हरिजनों के उद्धार में सबसे पहला कदम आर्य समाज ने उठाया |
- लड़कियों की शिक्षा की जरूरत सबसे पहले उसने समझी |
- वर्ण व्यवस्था को जन्मगत न मानकर कर्मगत सिद्ध करने का श्रेय इसी समाज को है |
- आर्य समाज ने अपनी स्थापना से ही सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन का शंखनाद किया |
- जाति भेदभाव और खान - पान के छुआछूत और चौके - चूल्हे की बाधाओं को मिटाने का गौरव इसी को प्राप्त है |
- आर्य समाज के द्वारा ज्ञानमूलक व रसात्मक दोनों प्रकार से साहित्य की वृद्धि की गई है |
- आर्य समाज ने हिंदी पत्रकारिता के उन्नयन में ऐतिहासिक भूमिका निभाई |
- विधवाओं के पुनर्विवाह हेतु उन्होंने सार्थक व सक्रिय प्रयास किए |
- बाल विवाह के विरोध में विवाह के लिए लड़कों की आयु 25 वर्ष और लड़कियों की आयु 16 वर्ष निश्चित की |
- आर्य समाज के माध्यम से कन्या स्कूल खोलने तथा स्त्री शिक्षा के प्रचार का कार्य किया

निष्कर्ष -

स्वामी दयानंद सरस्वती ने शैक्षिक व सामाजिक विकास में भारत को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है | आर्य समाज के माध्यम से राष्ट्रीय कल्याण में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान अतुलनीय है | आर्य समाज के दर्शन पर आधारित शिक्षा के अनेक विचार एवं विशेषताएं आधुनिक एवं वर्तमान समाज में भी प्रासंगिक हैं | जैसे अनुशासन, आदर्श चरित्र, शिक्षा के उद्देश्य, छात्र अध्यापक संबंध आदि विचारों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली को समाहित करके अनेक प्रकार की शैक्षिक व सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है |

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. आचार्य प्रेमभिक्षु (2009) "दयानंद की दया" सत्य प्रकाशन वद मंदिर वृंदावन मार्ग, मथुरा।
2. दयानंद, स्वामी, सत्यार्थ प्रकाश।
3. गुप्ता, एस. पी (1999) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. लाल, रमन बिहारी (2007) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री सिद्धांत रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
5. यादव, ए. आर. (2015) "आर्य समाज एवं स्वतंत्र गतिविधियां।